सामान्य विशेष

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सामान्य वह है जो एक समुदाय के सभी प्राणियों में समान रूप से रहे। विशेष वह है जो एक समुदाय के कुछ लोगों में रहे। जैसे मनुष्य में मनुष्यता सामान्य रूप से रहती है। मनुष्यता के कारण ही मानव मानव कहलाता है। विशेष गुण के कारण वह अन्य प्राणियों से अलग दिखलाई पड़ता है। सामान्य सनातन सत्य है। यह सभी वस्तुओं में समान रूप से रहता है। सर्वोदय सामान्य है। सर्वोदय का अर्थ है सबका विकास होना चाहिए किसी के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए। यह एकसमान सब पर लागू होता है। विद्वान व्यक्ति, गुणी व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। किन्तु ऐसा नहीं है कि मन्दबुद्धि का अपमान हो। सभी का सम्मान होना चाहिए।

अच्छे विचारों का सर्वत्र सम्मान होना चाहिए। सर्वमान्य गुण यह है कि भीतर विराजित आत्मा शुद्ध चैतन्य है। यह ज्ञाता द्रष्टा भाव है। चौरासी लाख जीव योनियों में विराजित आत्मा सभी प्राणियों में समान रूप से रहती है। पूर्व जन्म के कर्म और प्रारब्ध के अनुसार व्यक्ति व्यक्ति में भेद देखा जाता है। पद और प्रतिष्ठा, धन–दौलत, भौतिक समृद्धि के कारण भेदभाव नहीं होना चाहिए। आज का युग में प्रतिस्पर्धा का युग है। इसमें एक–दूसरे को देखकर के लोग आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। आगे बढ़ना अच्छी बात है किन्तु किसी का नुकसान करके आगे बढ़ना ठीक नहीं है। इससे नकारात्मक विचार मानव में घर कर जाता है। सकारात्मक चिंतन के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

मानव का दृष्टिकोण सर्वे भवन्तु सुखिनः अर्थात सभी व्यक्ति सुखी हों, सबका विकास हों और सबका कल्याण हों इस प्रकार का होना चाहिए। यह भावना वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को बढ़ावा देती है। आज के वैश्वीकरण के युग में पूरा विश्व एक बाजार बनकर के रह गया है। यह एक सामान्य बात है। इसमें मैत्री, प्रमोद, करुणा और सहयोग की भावना होनी चाहिए। अपने विकास के साथ–साथ दूसरों के विकास की भी बात करनी चाहिए। अपना विकास तो

सभी करते हैं। पशु भी अपना पेट पाल लेता है। मानव पंचेन्द्रिय प्राणी है उसमें इन्द्रियों का विकास सबसे अधिक है। अन्य प्राणियों में इन्द्रियों का विकास मानव जैसा नहीं है। यह मानव की सामान्य विशेषता है।

भारतीय संस्कृति में ऐसे मूल्यों को महत्व दिया गया है कि समाज में सभी प्राणी सुखपूर्वक रह सके। भगवान् महावीर का यह सिद्धान्त है कि हर प्राणी का आदर करो– परस्परोपग्रहोजीवानाम्। इसका अर्थ है सभी प्राणी परस्पर मिलकर सहअस्तित्व के साथ रहे। कोई किसी से बैर न करे, कोई किसी से रागद्वेष न करे। यही इस सूत्र का हार्द्र है। यह संसार सबका है किसी एक व्यक्ति या प्राणी का नहीं। इसलिए इसका उपभोग सभी संयम पूर्वक करें कोई किसी के जीवन में हस्तक्षेप न करे।

प्रकृति मानव को सभी चीजे उपलब्ध करायी है। सूर्य का प्रकाश सभी लोगों के लिए है। वायु सभी के लिए है। सम्पूर्ण वायुमण्डल सभी के लिए है, आवश्यकता है इनके सदुपयोग की। यदि मानव त्यागपूर्वक इनका उपयोग करता है तो प्रकृति का खजाना कभी समाप्त होने वाला नहीं है। प्रकृति ने खुब दिया है, इसका त्यागपूर्वक उपयोग होना चाहिए। मानव एक सामाजिक प्राणी है स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की चेतना उसमें समाहित है अहिंसा की वृत्ति भी उसके अंतर्गत है। अहिंसा का तात्पर्य है जीव हिंसा न करना। इसके साथ ही साथ प्राणियों के साथ मैत्री, मुदिता, सहिष्णुता, समता आदि भी अहिंसा के ही पर्याय है। सादगी का भी अपना एक दर्शन है, इसे हम आत्मशांति का दर्शन कह सकते हैं।

करुणा मानवीय संवेदना का एक विशेष भाव है जिसमें मानव का हृदय विगलित होता चला जाता है। करुणा भाव कहीं भी, यहां तक कि नितांत अपरिचित प्राणी को भी पीड़ा–ग्रस्त देखकर उभर सकता है। करुणा भाव से ही संवेदना जगती है, व्यक्ति या प्राणी जो पीड़ित है उसकी छटपटाहट कभी–कभी द्रष्टा के मन में ऐसी पीड़ा पैदा कर देती है। कभी–कभी तो करुणाशील व्यक्ति रोते हुए दुःखी प्राणी के साथ स्वयं रोने लगता है। वह दुःखी के दुःख को अपने आप में अनुभव करता है। यह संवेदना करुणा भाव से ही जग पाती है। करुणा वस्तुतः एक आत्म भाव है। आर्तग्रस्त प्राणी तो निमित्त मात्र होता है।

परमार्थ की आराधना में करुणा भाव का सर्वाधिक महत्व है, सच पूछा जाए तो करुणा के बिना परमार्थ हो ही नहीं सकता। जैन शास्त्रों में करुणा का ही पर्यायवाची शब्द अनुकम्पा है। जटायु को तड़पता देख श्री रामचन्द्रजी स्वयं विगलित हो गये। उन्होंने सीता को ढूंढ़ना छोड़ दिया और जटायु की सेवा करने लग गये। उस घायल पक्षी को गोद में उठाकर गले लगाया और प्यार से सहलाया। श्री रामचन्द्रजी भी उसका दुःख देख विचलित हो गये। यदि मनुष्य सभी प्राणियों के साथ मेल–जोल सद्भावना और समतापूर्वक रहता है तो उसके जीवन में शांति बनी रहती है। शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए सहअस्तित्व की कल्पना आवश्यक है। सहअस्तित्व का अर्थ है कि जीवन जितना हमे प्रिय है उतना ही अन्य प्राणियों को भी प्रिय है। **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्** अर्थात् जो हमारे अनुकूल नहीं है वैसा आचरण हमें दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए। यदि हम किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप किसी अन्य प्राणी के जीवन में करते है तो उसको दुःख होता है।